|  |
| --- |
| 09. Februar 2025 |
| **5. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Jes,6,1-2a.3-8; Zweite Lesung:1 Kor 15,1-11 oder 15,3-8.11; Evangelium: Lk 5,1-11 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 140, 1-3  | Kommt herbei |
|  | GL 147, (3. Str.!) | Herr Jesus Christ |
|  | GL 384, 1+2+4 | Gott ist gegenwärtig |
|  | GL 396 | Lobt froh den Herrn |
|  | GL 411 | Erde singe, dass es klinge |
|  | GL 546, 1+2+4 (Evangelium) | Christus, du Licht |
|  | GL 712 | Singt dem Herrn, alle Völker  |
|  | GL 713 | Du hast uns, Herr, gerufen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 130 | Herr, erbarme dich |
| Gloria: | GL 131 | Ehre sei Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 138,1-5.7c-8 |  |
|  | Kehrvers: GL 44, 1 | Singt unserm Gott |
|  | Kehrvers: GL 649, 5 | Mein Herz ist bereit |
|  | Psalmlied: |  |
|  | GL 143, 1+3 | Mein ganzes Herz |
|  | GL 366, 3 | Wort des Vaters |
|  |  |  |
|  | Wenn nur die 2. Lesung genommen wird: |
|  | GL 103, 1-3 | Dieser Tag ist Christus eigen |
|  |  |  |
| Halleluja: | Ruf: GL 174, 7 |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Kommt her, mir nach!* |  |
|  | *Ich werde euch zu Menschenfischern machen.* |
|  |  |  |
| Credo: | Sprechen |  |
|  | GL 456, 1-4 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 457, 1+3 | Suchen und fragen |
|  | GL 461, 1+2 | Mir nach, spricht Christus |
|  | GL 474 | Wenn wir das Leben teilen |
|  | GL 477 | Gott ruft sein Volk  |
| Sanctus: | GL 132 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 133 | Lamm Gottes |
| Danksagung: | GL 275, 1+4  | Selig, wem Christus |
|  | GL 360, 4 | Die ihr von Christi Hause |
|  | GL 453, 1+4 | Bewahre uns Gott |
|  | GL 468, 1+3 | Gott gab uns Atem |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 389, 4-6 | Dass du mich einstimmen |
|  | GL 362, 1+2 | Jesus Christ |